B-2
2-12
Ancient India

वैदिक संस्कृति

उत्तर वैदिक काल (1000 ई.पू - 600 ई.पू):

* इस काल में यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद के साथ-साथ ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक एवं उपनिषद् की रचना हुई।
* इस समय ऋग्वैदिक समाज का प्रसार सप्त सैन्धव, सरस्वती, दृषद्वती नदी से आगे बढ़कर दिल्ली, मेरठ होते हुए गंगा-यमुना दोआब तक हो गया।
* उत्तर वैदिक काल का मुख्य केंद्र मध्यदेश था।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

सामाजिक जीवन

* समाज 4 वर्णों में विभक्त था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र
* यज्ञों एवं कर्मकांडों में वृद्धि। अतः ब्राह्मणों के सामाजिक प्रभुत्व में वृद्धि हुई।
* व्यवसाय जातियों में परिवर्तित होने लगे।
* वर्ण का आधार कर्म के आधार पर न होकर जन्म के आधार पर हो गया। वर्णों में कठोरता आने लगी।
* व्यवसाय आनुवांशिक होने लगे
* ऐतरेय ब्राह्मण में वर्णों के कार्य निर्धारित कर दिये गये।

* ब्राह्मण, क्षत्रियों एवं वैश्यों के लिए उपनयन संस्कार निर्धारित किया गया। इनको द्विज कहा गया। द्विज का अर्थ दोबारा जन्म है। महिलाओं को भी उपनयन संस्कार से वंचित कर दिया गया।

* स्त्रियों में रथकार को यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार था।

* संन्यास के रूप में चौथा आश्रम शामिल हुआ। (जाबालोपनिषद्)

* गोत्र परंपरा की स्थापना तथा समान गोत्र में विवाह को प्रतिबंधित किया गया। इसे गोत्र बहिर्विवाह कहते हैं।

* 8 प्रकार के विवाह की जानकारी उत्तरवैदिककालीन ग्रंथों में मिलती है। (ब्रह्म, गंधर्व, दैव, आर्ष, प्रजापत्य असुर, राक्षस, पैशाच)

* इस काल में बड़े पुत्र को उत्तराधिकार देने की प्रक्रिया प्रारंभ हुई।

* इस काल में महिलाओं के अधिकार में गिरावट हुई जैसे-
  - इनका उपनयन संस्कार प्रतिबंधित
  - यज्ञ स्थल पर जाने की अनुमति नहीं
  - सभा एवं समिति में भाग लेने पर प्रतिबंध
  - उत्तर वैदिक काल की विदुषी : गार्गी, मैत्रेयी, सुलोचना

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

→ संपत्ति के अधिकार से वंचित

* शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख है कि अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया गया था।
* इस काल में पितरों (पूर्वजों) की पूजा प्रारंभ हुई।

उत्तरवैदिककालीन राजनीतिक जीवन

* ऋग्वैदिककालीन खानाबदोशी समाज उत्तरवैदिक काल तक आते-2 स्थायी होने लगा। अर्थात वैदिक जन एक विशेष क्षेत्र में स्थायी रूप से बसने लगे इन क्षेत्रों को जनपद कहा जाने लगा। बाद में सभी जनपद मिलकर महाजनपद बन गए।
* इस जनपद के नेतृत्वकर्ता को राजा कहा जाने लगा; जो अब भूमि का स्वामी हो गया।
* हमें कई राजाओं का उल्लेख मिलता है जैसे- विदेह के राजा जनक, पांचाल के प्रवाहण जाबालि आदि।
* उत्तर वैदिक काल में पांचाल सर्वाधिक विकसित राज्य था। शतपथ ब्राह्मण में इनको वैदिक सभ्यता का प्रतिनिधि कहा गया है।
* उत्तर वैदिक काल में राजतंत्र ही शासन का आधार था परन्तु हमें कहीं-कहीं पर गणतंत्रों के भी उदाहरण मिलते हैं।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

* ऋग्वैदिक कालीन कबीलाई संस्थाओं विदथ और गण का पतन हो गया।
* सभा और समिति राजा की निरंकुशता पर रोक लगाती थी।
* ऐतरेय ब्राह्मण में राज्य की उत्पत्ति एवं राजा की दैवीय उत्पत्ति के बारे में विवरण मिलता है, अब राजा सामान्य उपाधियों के स्थान पर राजाधिराज, सम्राट, एकराट जैसी उपाधियां धारण करने लगा।
* उत्तर वैदिक काल में नियमित कर की शुरुआत हुई जिसे बलि कहा गया। इसे भाग भी कहा गया जिसकी वसूली के लिए अर्थमंत्री भागदुघ अधिकारी की नियुक्ति हुई इसे समाहर्ता भी कहते है।

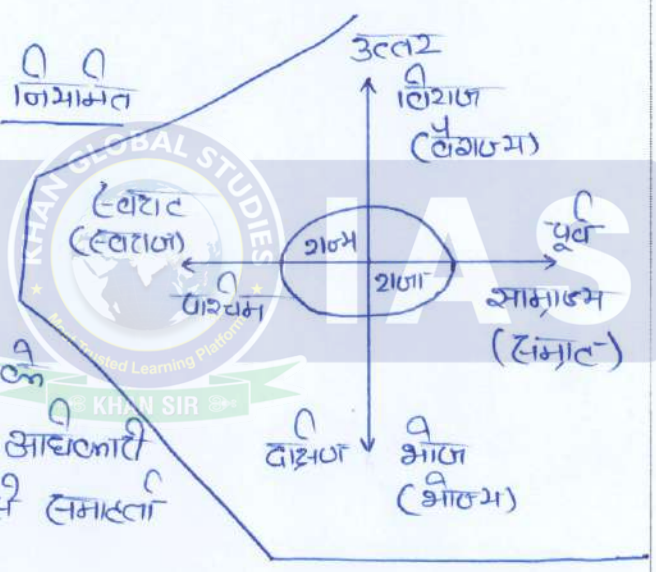

* राज्याभिषेक के बाद राजा 12 रत्नों के पास जाता था।

1> सेनानी
2> संग्रहीतृ
3> भागदुघ
4> सूतकार
5> ग्रामणी
6> प्रतिहार
7> क्षता
8> आखवाप

* उत्तर वैदिक काल के अंत तक आते-2 सेना संगठित हो गई।
* उत्तर वैदिक काल में स्थपति एवं शतपति नामक दो प्रांतीय अधिकारियों का वर्णन मिलता है।

* यज्ञ
  - → राजसूय यज्ञ: राजाभिषेक के समय किया जाने वाला यज्ञ। इस यज्ञ द्वारा जनता यह मान लेती थी अब हमारे राजा में देवत्व का गुण आ गया है।
  - → वाजपेय यज्ञ: इसमें रथदौड़ का आयोजन होता था और राजा को विजयी बनाया जाता था।
  - → अश्वमेध यज्ञ: संप्रभुता
  - → अग्निष्टोम यज्ञ
  - → पंच महायज्ञ
    1. ब्रह्म यज्ञ
    2. देव यज्ञ
    3. पितृ यज्ञ
    4. नृ यज्ञ
    5. भूत यज्ञ

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR